

ASMA ARCHIVES

3287

121611125 12 21157

326

ह्रीं गन्धोदके दू फट् ॥ ३ ॥

रस्य धमसारदा पूजा विधिः ॥
आवमन ३ ॥ ततो जलशोध
नं ॥ ॐ ह्रीं शान्ततत्त्वा स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वा स्वाहा ॥ ॐ
ह्रीं शिवतत्त्वा स्वाहा ॥ सूर्यो
र्ध्व ॥ ॐ अथादिवाक्य ॥ व
सन्नाराधन श्री सरस्वती दे
व्यर्चन कर्तुं श्री सूर्योय ॥
ॐ आरुह्ये ॥ ॐ भास्वराय
पुष्पं २ ॥ धूपं २ ॥ गुरुनमस्का
रा ॥ ॐ अखवर उमरा ले
ति ॥ ॥ गायत्री न्यास ॥ सामा
न्यार्घ्यस्थापनम् ॥ तत उदके
न देवा द्वारं प्रोक्ष्य ॥ द्वार पूजा
॥ ॐ त्रिदशैश्वराय २ ॥ ॐ वज्र
काय २ ॥ ॐ महा लक्ष्मी २ ॥ ॐ
सरस्वती २ ॥ इति चतुर्दिक्षु
ततो दक्षिणार्धे स्वायां ॥ ॐ
विद्याय २ ॥ वामे शारवायां

ॐ क्षत्रपालाय २ ॥ दक्षिणार्धे
ॐ गंगायै २ ॥ वामे पार्श्वे
ॐ जमुनायै २ ॥ देहल्यां ॥ ॐ
देहल्यै २ ॥ भूमौ ॥ ॐ वास्तवा
लिपते ये ब्रह्मरो २ ॥ ॥ ततो
भूतविदा वने ॥ अथ सर्पपु
त्रेति ॥ ॐ अस्त्राय फट् ॥ ॥
तत आसनस्थापनं ॥ ॐ पृ
थ्वीति मंत्रममेवा ॥ ॐ पृथ्वि
त्वया धृता लोकेति ॥ ॐ पृ
थिव्यै २ ॥ ॥ तत करालिव
धा वामे नमस्कृत्य ॥ ॐ गं
गारोत्राय २ ॥ ॐ गुंगुरुखा
२ ॥ दक्षे ॥ मध्ये ॥ ॐ ऐं वार्गी
भ्यै २ ॥ ॥ ततो मूतथुदि
॥ आधारं वक्त्रे त्रिकोणाम
ध्ये स्थितं कनीयं सीको
टि विद्युन्निभां सादृ चित्रं
याका संप्रसुप्र

राशि वलिंगवेष्टितो कुराडलिनी
 व्यावाहंस इति मन्त्रेणोत्थाप्य
 पंचविंशतितत्वेन सहोद्धनी
 त्वाशिरसि सहस्रदलकमल
 वधि तपसु शिवस्वरूपगुरुणा
 सहसं योज्यत दुद्रवामृतेन स्व
 सरीरं स्नावयेत् ॥ ततः प्राणा
 याम् ॥ यै १६ ॥ रं ३४ ॥ यै ३२ ॥ वै
 १६ ॥ लें ६४ ॥ हं ३२ ॥ इति प्राणा
 याम् ॥ सोहमिति मन्त्रेण कुराड
 लिन्यादी पंचविंशतितत्वं स्वस्य
 स्थाने स्थापयेत् ॥ इति भूतश्च
 द्विः प्राणायामः ॥ ततः स्वद
 दये प्राणायुतिष्ठाम् ॥ ॐ श्रीं ह्रीं
 क्रों इत्यादि प्राणवत् ॥ ततः
 षादिनाम् ॥ ॐ अस्य श्रीमा
 यापुटितं शाक्षरमन्त्रम् ॥ शि
 रसि ॥ ॐ बृहस्पति ऋषये
 ॥ सुखे ॥ ॐ विशङ्कन्दसे ॥
 ॥ ॐ वागीश्वरी देवताये
 ॥ ॐ ह्रीं बीजाय ॥ पा

दयोः॥ स्वाहा शक्तये२॥ सर्वो
 ज्ञः॥ ॐ कीलकाय२॥ वर्धा ॐ
 लि॥ महासारस्वतप्राप्तिमुक्
 तित्वपाणिउत्पसिद्धयर्थे जपे
 विनियोगः॥ ॥ कराङ्गन्यासः
 ॐ अं कं खं गं घं उं अं अं गुं
 षाभ्यां नमः॥ इत्यादिकरख
 ङं गन्यासः॥ ॥ अत्र शक्तिश्चे
 न्मातृकाया वर्णन्यासः॥ ॥
 अथ पीथन्यासः॥ हृदये॥
 ॐ आधारशक्तये२॥ एवं॥ मू
 लप्रकृत्यैः कर्मण्यः अनन्ताः
 वराहायः पृथिव्यैः क्षीरसमु
 द्रायः श्वेतदीपायाः मरिचम
 राग्रायः कल्पवृक्षायः मर
 सिवेदिकायैः रक्तसिंहास
 नायः इति हृदि॥ ॥ दक्षश्च
 न्धे॥ ॐ जानोय२॥ दक्षिणे
 रो॥ ॐ वैराजाय२॥ म
 अधममाय२॥ वा

॥ अथ ॥

शानाय ॥ ५८ ॥ ॐ शुभे शानाय
 य ॥ नानामो ॥ ॐ अने श्वर्यो
 य ॥ पुनर्दि ॥ ॐ अनन्तर
 ॥ ॐ स्व ॥ पद्माय ॥ आनन्दक
 न्दाय ॥ सवितालाय ॥ पद्माय
 सर्वतत्त्वोत्तमकपद्माय ॥ पु
 प्रकृतिमयपत्रेभ्यो ॥ रविकार
 मयकेरभ्यो ॥ पंचाशद्वर्गोवी
 जाद्युक्तिर्लोकये ॥ शुभे श्वर्यो
 राउलाय ॥ ॐ सूर्यमराउलाय
 रं ॥ शुभिमराउलाय ॥ संसत्वा
 य ॥ रं रजसे ॥ तंतमसे ॥ ॐ
 आत्मने ॥ शुभे श्वर्यो ॥ अने न्तरात्मने
 पं परमात्मने ॥ श्री शानात्म
 ने ॥ केशरे ॥ ॐ मेधाये
 ॥ ॐ स्व ॥ प्रजाये ॥ प्रभाये
 विद्याये ॥ धृत्यै ॥ स्मृत्यै ॥ व
 द्यै ॥ विद्याये ॥ मध्ये ॥ वर्यो
 पद्माशनाय ॥ ॥ इति पीठ
 ॥ ॥ ततो वर्यो न्यासः
 ॥ शिरसि ॥ ॐ दं

दक्षवर्गा ॥ ॐ वं ॥ वामकर्णे
 ॐ दं ॥ दक्षनेत्रे ॥ ॐ वां ॥ वा
 मनेत्रे ॥ ॐ स्वां ॥ दक्षना
 सापूते ॥ ॐ दिं ॥ वामना
 सापूते ॥ ॐ निं ॥ वदने ॥
 ॐ स्वां ॥ लिङ्गे ॥ हां ॥ गुडे
 ॥ ॥ मूले नव्यापके विधा
 विन्यस्य ॥ स्वात्मानं देवता
 रूपं भावयेत् ॥ इति न्यासः ॥
 ततो अर्घ्यपात्रस्थापनं ॥ ॥
 भूमौ विकोराष्ट्रद्विकोराष्ट्र
 तचतुरस्रं विलिख्य पूज
 येत् ॥ ॐ हिं ॥ आधारशक्त्या
 दिभ्यो ॥ विषादिकां प्रखा
 ल्य ॥ अस्त्राय रुद्र ॥ मराउ
 लोपरि निधाय ॥ पूजयेत्
 ॐ मं ॥ वह्निमराउलाय द्वा
 कलात्मने ॥ अर्घ्य
 स्वात्मानं ॥ अस्त्राय

चकोपरिनिधाय पूजये
 त॥ ॐ हं मूर्य मराउलाय
 दादशकलात्मने ॥ वारि
 रापूरयेत॥ ॐ वृं वरुणा
 यशाचिन्दनाक्षतपुष्पनि
 धाय॥ ॐ पूजयेत॥ ॐ सोम
 मराउलाय षोडसकलात्म
 ने ॥ अङ्कुरामुद्रया मूर्य
 मराउला त्रीधर्मावाहयेत॥
 ॐ गङ्गे वयसुनेवेति॥ षडं
 गेन पूजयित्वा॥ मत्स्यमुद्र
 या छाया॥ मूलेन त्रिधा सं
 जप्य धनुमुद्राप्रदर्शयेत
 ॥ वं ॥ तालत्रयदिग्वर्त्तनं॥
 अष्टाय फट्॥ फट् १०॥ इ
 त्पद्योपात्रस्थापनम्॥ ॥
 ततो अर्घोदकेन स्वात्मानं
 सामग्रीनि प्रोक्षयेत्॥ ॐ
 श्रीशरिविद्महे कामेश्व
 र नमः॥ पुबोद

यात्॥ पूजासामाग्रीशोध
 येत॥ यै ३ रं ३ वं ३॥ धेनुमु
 दादर्शयेत्॥ वं॥ तत आत्म
 पूजा॥ ॐ आत्मने चन्दनं
 एवं प्रप्यः॥ मूलेन शिरसि
 त्र्यञ्जलि॥ ॥ स्वसिरसि गुरु
 रूपजा॥ ॐ गुरुभ्यो २॥ य
 वं परम परापर परमे
 ष्ठी दिव्योद्यः सिद्धोद्यः
 मानवोद्यः॥ इति गुरुपूजा
 ॥ ततः पीठपूजा॥ ॐ आ
 धारशक्तये ॥ ॐ मूलप्र
 कृते २॥ ॐ कर्मय २॥ ॐ
 प्रनन्ताय २॥ ॐ वराहाय
 २॥ ॐ पृथिव्यै २॥ ॐ क्षीर
 सिन्धवे २॥ ॐ स्वेतदीपा
 य २॥ ॐ मरिामराउपाय २
 ॥ ॐ कल्पवृक्षाय २॥ ॐ म
 र्तिवेदिकायै २॥

वकीपरिनिधाय पूजये
त॥ ॐ हं मूर्य मराउलाय
दादशकलात्मने ॥ वारि
णा पूरयेत॥ ॐ वृं वरुणा
यशाचन्द्रनाक्षतपुष्पनि
धाय॥ ॐ पूजयेत॥ ॐ सोम
मराउलाय षोडशकलात्म
ने ॥ अङ्गुशामुद्रया मूर्य
मराउला तीर्थमावाहयेत॥
ॐ गङ्गे च यमुने वेति॥ षड
गेन पूजयित्वा॥ मत्स्यमुद्र
या द्वाया॥ मूलेन त्रिधा सं
जप्य धनुमुद्रा प्रदर्शयेत
॥ वं॥ तालत्रयदिग्वर्धनं॥
अस्त्राय फट्॥ फट् १०॥ इ
त्यर्घ्यपात्रस्थापनम्॥ ॥
ततो अर्घ्योदकेन स्वात्मानं
सामग्रीनि प्रोक्षयेत्॥ ॐ
शिवारिविघ्नहर्कामेश्व
रान्नरात्तिः प्रबोद

यात्॥ पूजासामाग्रीशोध
येत्॥ यैश्च ३ वं ३॥ धेनुमु
द्रा दर्शयेत्॥ वं॥ तत आत्म
पूजा॥ ॐ आत्मने चन्द्रनं
रवं प्रप्यः॥ मूलेन शिरसि
त्र्यञ्जलि॥ ॥ त्वसि रसि गु
रुपूजा॥ ॐ गुरुभ्यो २॥ य
वं परमः परापरः परमे
ष्ठी दिव्योद्यः सिद्धोद्यः
मानवोद्यः॥ इति गुरुपूजा
॥ ततः पीठपूजा॥ ॐ आ
धारशक्तये ॥ ॐ मूलप्र
कृतये ॥ ॐ कर्मोय ॥ ॐ
अनन्ताय ॥ ॐ वराहाय
॥ ॐ पृथिव्यै ॥ ॐ क्षीर
सिन्धवे ॥ ॐ स्येन दीपा
य ॥ ॐ मणिमराउपाय ॥
॥ ॐ कल्पवृक्षाय ॥ ॐ म
णिवेदिकायै ॥

सिंहासनाय ॥ ॐ धर्मा
य ॥ ॐ ज्ञानाय ॥ ॐ वै
राजाय ॥ ॐ ऐश्वर्याय
॥ इति वेदेषु ॥ विद्विषु
॥ ॐ अधर्माय ॥ ॐ अ
ज्ञानाय ॥ ॐ अवैराजा
य ॥ ॐ अनेश्वर्याय ॥
ॐ आनन्दकन्धाय ॥ ॐ
सविन्नालाय ॥ ॐ सर्व
सत्त्वात्मकपद्माय ॥ ॐ
प्रकृतिमयपत्रेभ्यो ॥ ॐ
विकारमयकेशरेभ्यो ॥ ॐ
पंचाशद्वर्षावीजाद्यकर्त्ति
कायै ॥ ॐ अं अर्द्धमराट
लाय ॥ ॐ अं सोममराट
लाय ॥ ॐ अं अग्निमराट
लाय ॥ ॐ अं संसत्त्वाय ॥ ॐ अं
॥ ॐ अं तंतमसे ॥ ॐ
॥ ॐ अं अं अं अं

रात्मने ॥ ॐ पं परमात्म
ने ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने ॥
॥ वेङ्कटेश्वर ॥ ॐ मेधाये ॥
ॐ प्रजाये ॥ ॐ प्रभाये ॥
ॐ विद्याये ॥ ॐ चतुष्टये ॥
ॐ स्मृतये ॥ ॐ बुद्धये ॥ ॐ
विद्येश्वर्यै ॥ मध्ये ॥ ॐ
वर्षापद्मासनाय ॥ इ
ति गन्धोक्तकुसुमाक्षनेः
पीठं संपूज्य ॥ ॥ ततो देवी
ध्यायेत् ॥ ॐ नमो ह्यसक
लमिन्द्रोर्विभूतिशुभका
न्तिवुचभररामिताम्नीस
न्निधरस्यसितोषु ॥ निज
करकमलोद्गले खनीपु
ष्टकेश्रीसकलविभवति
सिद्धिपातवाग्देव
इति ध्यात्वा ॐ

निमाया निदध्यात् ॥ ॐ म
हापद्मवनान्तस्थे कार
णानन्दविग्रहे ॥ सर्वभू
तहिते मातरे ह्येहि परमे
श्वरी ॥ इत्यावाहनं ॥ देवे
सिभक्ति सुरभे परिवार
समन्विते ॥ यावत्वा पूज
यिष्यामि तावत्त्वं सुस्थि
तो भव ॥ आवाहनादिमू
लां प्रदक्ष्य प्रारापतिष्ठं
क्षुर्व्यात् ॥ ॥ ततश्चासनादि
सुपचारोदयात् ॥ ॐ वागी
श्वर्ये इदमासनं समर्पया
मि ॥ स्वः पादः अर्घ्यः आ
चमनीयः मधुपर्कः पुनरा
चमनीयः स्नानः वस्त्रः चन्द
नः सिन्दूरः अनुलेपनः अ
र्घ्यः पुष्पः आ
मृत्युः ॥ ॐ

लि ॥ ॐ ह्रीं वदवदवाग्वा
दिनी स्वाहा ह्रीं ॐ श्रीवागी
श्वर्ये ॥ ३ ॥ षडङ्गेन पू
जनं ॥ योनिमुद्रादर्शये
त् ॥ ॥ ततश्चाभरपूजा ॥
अष्टपत्रे ॥ ॐ योगार्ये ॥
ॐ सत्पार्ये ॥ ॐ विमलार्ये
॥ ॐ ज्ञानार्ये ॥ ॐ बुद्धार्ये
॥ ॐ समुत्तार्ये ॥ ॐ मेधाार्ये
॥ ॐ प्रज्ञार्ये ॥ ॥ ततोदला
गो ॥ ॐ वाह्ये ॥ ॐ शैवे ॥
॥ ॐ गुह्ये ॥ ॐ नारायणे
॥ ॐ शुकार्ये ॥ ॐ शक्ते
श्वर्ये ॥ ॐ चर्चिकार्ये
॥ ॐ महालक्ष्म्यै ॥ ॥ भूपू
रे ॥ ॐ लूण्डाय ॥ ॥ हं अग्न
ये ॥ ॐ मृगमाय ॥ ॐ क्षूनेत्र
माय ॥ ॐ वृषभ
वायवे ॥ ॐ

हूं ईशाशाय ॥ अं अं नं
 नाय ॥ अं उं उं य ॥ ॥
 तदहि ॥ वं वं ज्ञाय ॥ शं
 शक्तय ॥ दं दं राशाय ॥
 खं खं ज्ञाय ॥ पां पां ज्ञाय
 य ॥ अं अं कुं ज्ञाय ॥
 गं गं दाये ॥ शं शं लाय
 ॥ चं चं ज्ञाय ॥ पं पं ज्ञाय
 य ॥ ॥ इत्यावरपूजां
 कुर्यात् ॥ ॥ ततो मध्ये मू
 लमंत्रेणां अलित्रयं द
 त्वा नमस्कुर्यात् ॥ ॥ त
 तो देव्याः पतिरूपं महावि
 ष्णुं पूजयेत् ॥ ॥ अं भू भू
 वः स्वः महाविष्णो इहाग
 देत्यावाह्य ॥ ॥ अं गरु
 डासनाय ॥ ध्याने ॥ अं
 उं अं कोटिदिना कुर्यात्
 मनि संशं वं

जं चक्रं निभुतमिन्दिराव
 सुमति संसौभिमाश्रद्ध
 यं ॥ कोटीराजं दहं कु
 रातलधरं पीताम्बरं कोरु
 भो दीपं विश्वधरं स्ववक्ष
 मिलसंक्षीवत्सविद्रं
 भजे ॥ इति ध्यात्वा पाद्यायु
 पचारान्दधात् ॥ अं अलि
 ॥ अं नमो नारायणाय ॥
 ॥ ३ ॥ वामे लक्ष्मीं ध्यायेत्
 ॥ अं मां शिवाय प्रतिमप्र
 भां हिमनिभै रक्तैश्चतु
 र्भिर्गजैर्हस्ताग्राहिमरत्न
 कुंभसलिलैरासिं व्यमा
 नां सदा ॥ हस्तौ वै वरदान
 मम्युजयुगाभीनिदधानां
 हरः कान्ताकृक्षितपारि
 कावन्दे सरो
 ने ध्यात्वा ॥

पाशादिभिरुपचारैः संपू
 ज्य। त्रयाश्रुतिः॥ ॥ स्तु
 श्रीं ह्रीं क्लीं लक्ष्म्यै ॥ ३ ॥
 ततो कामदेवं पूजनं ॥
 त्वावसन्नाथश्च परिवारं
 पूजयेत् ॥ वसंतोत्सवेऽपि
 वरपक्वं ॥ नत्वन्यत्र ॥ ॥ त
 तो धूपं ॥ ॐ वनस्पतिरशो
 धूतं नानागन्धैः प्रपूरितं
 ॥ आधारां सर्वदेवानां धू
 पोऽयं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ दीप
 ॐ अज्येनवर्तिकायुक्तं
 वह्निना योजितं मया ॥ इदं
 दीपं गृहारात्वं मया भक्ता
 निवेदितं ॥ नैवेद्यं ॥ ॐ नै
 वेद्यं गृह्यतां देवी भक्तिर्मे
 खचलां कुरु ॥ इप्सितं मे
 वरन्देहि प्रदत्तं मे
 तिः ॥ शंकर

आनिदधि क्षीरघृतानि वा ॥
 आहारं भक्षभोज्यं च नैवे
 द्यं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ फला
 नि ॥ ॐ इदं फलं मया देवी
 स्थापितं पुरस्तवातेन मे स
 फलावाप्तिं भजे जन्म जन्म
 नि ॥ सुगन्धचन्दनादिभिः
 करोते न ॥ ॐ करोद्धत्तं कं
 देवी कुंकुमागरुसंयुतम्
 ॥ मया निवेदितं भक्त्या गृ
 हार्त्तं वत्सलनन्दिनि ॥ ॥
 मुखवासो ॥ ॐ पूगी फलं स
 दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतं
 म ॥ कर्पूरेण समायुक्तं मु
 खवासं गृहाराभौ ॥ ॥
 ततो वेदार्चनम् ॥ ॐ वत्स
 रो न ॥ ॐ तत्त्वाजामीति द्वा
 रार्चनम् ॥ ॥ अथ द्वाद
 शैः सरस्वती ॥ ॐ ल
 श्रीश्चते ॥ १ ॥

ॐ वागीश्वर्यै ॥ ॐ पावका
 नः ॥ ॥ ॐ कान्तै ॥ ॐ त्रो
 दयित्री सुनृताना येतत्री
 सुमती नाम ॥ यज्ञं दधे स
 रस्वती ॥ ३ ॥ ॥ ॐ कान्ता
 यै ॥ ॐ महोऽश्वरः सर
 स्वती प्रचेतयति केतुना ॥
 धियो विश्वा विराजति ॥ ४ ॥
 ॥ ॐ दान्ता येनमः ॥ ॐ
 अश्विना तेजसा चक्षुः प्रा
 तो न सरस्वती वीर्यम् ॥ द्वावे
 न्यो वलेन्द्रा यदधुरिन्द्रिय
 म् ॥ ५ ॥ ॥ ॐ विधृतै ॥ ॐ
 कार्ष्णैर्दृष्टं सनाभिः यत्सु
 रामघ्नपिवः शचीभिः स
 रस्वती त्वामघवन्नभि
 ह्नुक ॥ ६ ॥ ॥ ॐ इन्द्र
 यै ॥ ॐ सुव ॥ सुरा मम
 श्विनानमुवावा
 वा ॥ विपिपा

तीन्द्रुर्मस्वावता ॥ ७ ॥ ॥ ॐ
 धीत्येनमः ॥ ॐ तामिषजा सु
 कर्मणा सा सुदुधा सरस्व
 ती ॥ सवृत्रहारातकतुरिन्द्रो
 यदधुरिन्द्रियम् ॥ ८ ॥ ॐ
 धृतै ॥ ॐ तानासत्पासुसु
 पेशसा हिरापवर्तेनीनरा
 ॥ सरस्वतीन्द्रकर्मसुनोव
 ता ॥ ९ ॥ ॥ ॐ मोहितायै ॥
 ॐ अश्विना गोभिरिन्द्रि
 यमश्वे भिवीर्यं च लम्
 ॥ हविषेन्द्रः सरस्वती यज
 मानमवर्द्धयम् ॥ १० ॥ ॥ ॐ
 धीमतायै ॥ ॐ तमिन्द्रम्य
 शवः सचाश्विनोभा सरस्व
 ती ॥ दधानाऽश्वानूषतह
 विषायज्ञ इन्द्रियै ॥ ११ ॥ ॥
 ॐ सतिमायै ॥ ॐ यम
 श्विना सरस्वती हविषेन्द्र
 यम् ॥ सविभेदचल

ममश्नमुवावासुरे सवा
 ॥१२॥ ॥ॐ सरस्वती ॥ॐ
 अश्विना हविन्द्रियन्म
 वदिया सरस्वती ॥ आशु
 क्रमासुरादसुमश्मिन्द्र
 यजमिरो ॥३॥ ॥ॐ विष्णु
 वे ॥ॐ इदं विष्णु ॥१४॥ ॥
 ॐ लक्ष्मी ॥ॐ श्रीराममुदा
 रोधरुरोरयीराममरा
 धाराणाप्यार्याः सोमगो
 पाः ॥ वसुः सुतुः सहसोऽय
 सुराजा विभ्रात्प्रगऽउषसा
 मिधानः ॥ ॥ॐ गरुडाय
 ॥ॐ सुपरो सिगरुक्मा
 स्त्रिवत्रे सिरो गायत्रश्चक्ष
 वृहत्तरेयको ॥ स्तोमया
 स्वयान्दोऽसंगानि वज्र
 ॐ पिनाम ॥ सामनेतनू
 मदेयं सनाय जि
 धिद्वेगाः शप

सिगरुक्मान्दिवज्रद्वे
 पत ॥ ॥ अत्र वसन्तोत्स
 वेवसन्त इष्टपरिवार
 सहितं कामदेवं स्वस्ववे
 देः प्राग्वत्पूजयेत् ॥ ॥ॐ
 स्वस्ति न इन्द्रो ॥ॐ पयः
 पृथिव्या ॥ॐ विष्णो ररा
 टमसि ॥ॐ अग्निदेवता
 ॥ॐ द्यौः शान्ति ॥ ॥ इति
 वेदाश्च नमः ॥ ततः सुग
 न्धोदत्त नमः ॥ॐ गन्धदा
 राम ॥ ॥ सिन्दूरादि ॥ॐ
 त्वञ्जो विष्टदा ॥ ॥ अमुक
 ॥ॐ अष्टश्रमस्य केतवो
 श्म विरसं योजनारं अनु
 ॥ भाजन्तोऽयुग्मयोश्च
 था ॥ ॥ धूपं ॥ॐ धू
 ॥ दीपं ॥ॐ ते

जी॥ ॥ फल॥ ॐ याः फ
 लिनी॥ ॥ निवेद्य॥ ॐ शुभ
 पते॥ ॥ ताम्बूलं॥ ॐ वमः
 परां चये॥ ॥ प्रतिष्ठा॥
 ॐ मनोजूति॥ ॥ ततो मू
 लमन्त्रेण सहस्रम्वास्त
 न्वाजन्वाजपं देव्ये सम
 प्ये राम॥ ॐ गुह्यानि गुह्य
 ॥ इति जपे समप्ये॥
 कर्पूरात्विमोरात्रिकं दत्वा
 ॥ ॐ आरात्रिपाथिर्वं रजः
 पितुः प्रामिधामभिः॥ दिवः
 श्वा० सिद्धहती चितिष्ठस
 श्वात्वेष्टं चर्तते तमः॥ इत्या
 रात्रिकं दत्वा॥ ॥ ततस्तोत्रं
 मुदीरयेत्॥ ॥ अथ सर
 स्वती स्तुतं मू॥ ॐ इयतमे
 ॥ ॐ नमः श्री सारदादे
 ॥ श्रीं श्रीं हथैक

अथ पंचश्लोकि॥ द्वाश्लोकि
 न्पठेत्॥ ॥ यंत्रं वयथाशक्ति
 तस्तोत्रं पठेत्॥ विष्णोस्तोत्रं
 पठेत्॥ ॐ नमो रत्ननन्ताये
 ति॥ ॥ कामदेवादीनां स्तोत्रं
 पठेत्॥ पापौहं पापकर्ममिति
 ॥ अत्र गन्धादि॥ दक्षिणा॥
 न्यूनाधिकमिदं कर्म यदि
 द्विदमष्टिद्वकम्॥ कुरु सं
 पूर्णा तान् देवी दक्षिणां प्रति
 दीक्यताम्॥ ॥ आशीर्वा
 द॥ आत्मायाभिषेकच
 न्दना आशीर्वाद॥ ॥ न्या
 सः॥ आचमनं॥ सूर्यप्रा
 क्षि॥ इति सरस्वती देव्य
 र्चनपद्धति॥ ॥ शुभम्॥

पारिजातसरस्वतीमंत्रः॥ नमः
 दिव्यासः॥ शिरसि॥ कर्णां नमः
 ये॥ तदुच्छुन्दसे॥ सरस्व
 तीदेवताये॥ ह्रीं अंगुष्ठा
 भ्यां॥ इति॥ ध्यानं॥ हं सार
 रा॥ वरहमित्तहारेन्दुराडा च
 दातावार्ता मन्दस्मिततरमु
 रवी भोलिवद्रेन्दुरेखा॥ वि
 श्रावीरामृतमयघटाक्षः
 श्रजादिप्रहस्ताशुभाज्वर
 स्थाभवदभिमनप्राप्तयेभा
 रती स्यात्॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं ॐ सरस्वते नमः॥ इति प्रा
 रिजातसरस्वती॥ ॥ ॥

ॐ नमः॥ ततश्चरुतिधरमंत्रः॥
 अथ दशाक्षरमंत्रं कर्त्तव्यं विः
 विराट् छन्दः श्रीवादेवताविद्या
 भीष्मादिजने विनियोगः॥ नमः
 ॥ हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं
 रसे॥ अमृतं

सुवः सुः अमृतयफद्रा सासनं॥
 हं कमलासनाये॥ ध्यानं॥ आशी
 माकमलेकरैर्ज्वलतिपरदयंपुष्ट
 कं विभ्रानातनूरुवदुमुकुटानुके
 दुकुण्डप्रभा॥ भालेन्मीलितलोचना
 कुचरत्नान्नालवभूतलेभृयाद्वाग्
 धिं देवतामुनिजनैरास्येवित्तानि स्या
 ध्यानपुष्पं॥ त्रयांजरिः पंचांजलि॥
 हं वाचस्पते इमं प्रवः प्रवः॥ पद्ममु
 द्रापुष्टकं नमः॥ परिवारपूजा॥ हं
 सर्वेभ्यो परिवारभ्यो॥ वेदावर्तनं॥
 ॐ पावकानः॥ धूपदीपनैवेद्यं॥
 जपस्तोत्रं॥ असलकमलाधिया
 सिनी॥ अथनादेति॥ देवाशीर्वाद
 ॥ नमः॥ आचमनं॥ यथाशक्ति
 पूजितासि क्षत्वा॥ इति श्रुतिध
 रपूजा॥ ॥ ॐ उद्भिः पूरावोद्भिः
 सर्ववागीश्वरसर्ववेदमयावित्त
 सर्वबोधयस्त्वात्॥ हयग्रीव